ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 19 16 से 22 जुलाई, 2015 दयानन्दाब्द 192 सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 द्वि. आ. कृ.15

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा में लिया गया महत्त्वपूर्ण निर्णय

पर्यावरण शुद्धि के लिए सारे देश में पेड़ लगाने का अभियान चलायेगा आर्य समाज

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों, गुरुकुलों के संचालकों, शिक्षण संस्थाओं तथा युवा संगठनों से अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का किया आह्वान

विगत 9 जुलाई, 2015 को सम्पन्न हुई सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा में एक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया गया जिसमें पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से सारे देश में अधिक से अधिक पेड़ लगाने का लक्ष्य रखा गया है। इस महत्त्वपूर्ण निर्णय के क्रियान्वयन के लिए सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी और सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने संयुक्त रूप से समस्त आर्यों, आर्य समाज के पदाधिकारियों, गुरुकुलों, संन्यासियों, वानप्रस्थियों तथा अन्य संस्थाओं से अपील की है कि सब मिलकर पूरे देश में अधिक से अधिक वृक्ष लगाने के लक्ष्य की पूर्ति हेतु अपने-अपने स्तर पर सक्रिय हो जायें।

स्वामी जी ने कहा कि आज सारे विश्व में पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है। अमेरिका जैसे देश भी इस पर्यावरण असंतुलन से चिन्तित दिखाई दे रहे हैं। आज पर्यावरण की जो विकराल समस्या हमें दिखाई पड़ रही है उसके तीन मुख्य कारण हैं :- (1) वायु प्रदूषण, (2) जल प्रदूषण, (3) ध्वनि प्रदूषण। इन प्रदूषणों में सबसे मुख्य है वायु प्रदूषण। विश्व का पर्यावरण ही प्रदूषित होगा तो मनुष्य का शारीरिक, आत्मिक, मानसिक विकास भी प्रभावित होगा। यह समस्या पूरे मानव समाज और विश्व की ज्वलंत समस्या बन चुकी है। यदि हम अपने खेतों और वनों पर ही ध्यान केन्द्रित करें तो पायेंगे कि वनों के अन्धाधुन्ध कटाई से ऋतुयें बदल रही हैं वर्षा प्रभावित हो रही है, नदियाँ प्रभावित हो रही हैं। वायु प्रदूषण के कारण प्रकृति का सौन्दर्य उसकी क्षमता, उसकी उपयोगिता जिस पर हमारा जीवन आश्रित है धीरे-धीरे नष्ट होता जा रहा है। इसे रोकना अत्यन्त आवश्यक है।

वैज्ञानिकों ने भी यह स्वीकार किया है कि यज्ञ, प्रदूषण को दूर करने में सबसे उपयोगी है आर्य समाजों ने यज्ञ की परम्परा को जीवित रखा हुआ है। यज्ञ में सुगन्धित वनस्पतियाँ, औषधियाँ, स्वास्थ्यप्रद अनाज और शक्कर आदि को मिश्रित कर आहुतियाँ दी जाती हैं जिनसे वायुमण्डल शुद्ध होता है। इसी प्रकार हमारे वृक्ष और वनस्पतियाँ भी वायु मण्डल को शुद्ध करने में अत्यन्त सहायता प्रदान करते हैं। क्योंकि वृक्ष दूषित वायु को रात्रि में ग्रहण करते हैं और उसी को शुद्ध वायु में परिवर्तित कर प्रात:काल वायु मण्डल में छोड़ देते हैं। अत: वृक्षों का होना अत्यन्त आवश्यक है। स्वामी जी ने कहा कि देश की धरती को पेड़-पौधे लगाकर हराभरा किया जायेगा और इसीलिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का लक्ष्य रखा गया है। स्वामी जी ने कहा कि प्रत्येक आर्य समाज अपने क्षेत्र में पेड़ लगाने का अभियान चलाये। अधिक से अधिक पेड़ लगाने से सारी दुनिया का उपकार होगा।

स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज का मुख्य पर्व श्रावणी आ रहा है, अत: जहाँ हम स्वाध्याय पर बल दें, आर्य समाजों में उपदेश और गोष्ठियाँ करने पर बल दें वहीं इस पर्व के आने तक वृक्षारोपण पर भी विशेष ध्यान केन्द्रित करें और आम जनता को प्रेरित करें कि वह भी अधिक से अधिक पेड़ लगायें। पर्यावरण सुरक्षा के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाना अत्यन्त आवश्यक है। आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य यह संकल्प करे कि वह कम से कम 10 वृक्ष अवश्य लगायेगा या औरों को प्रेरित करके लगवायेगा। जितनी आर्य समाज की संस्थायें हैं चाहे वह गुरुकुल हैं, आश्रम हैं, विद्यालय हैं वे सभी विशेष रूप से वृक्ष लगाने का अभियान चलायें यदि आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य एवं कार्यकर्ता इस दिशा में सक्रिय हो गया और प्रयत्नशील हो गया तो मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि करोड़ों वृक्ष अकेले आर्य समाज के प्रयास से लगाये जा सकेंगे और यह प्रयास विशेष रूप से पर्यावरण महायज्ञ के रूप में समझा जायेगा। पेड़ लगाना भी अपने आपमें एक बहुत बड़ा यज्ञ है इसलिए हम सभी इस दिशा में प्रयत्न करें और जहां-जहां भी ऐसा अभियान चले वे अपना समाचार सभा में अवश्य भेज दें ताकि उसे **'वैदिक सार्वदेशिक'** पत्रिका में प्रकाशित किया जा सके जिससे इस अभियान से और लोग भी प्रेरणा ले सकें।

एक पौधा लगाएं, क्योंकि...
50 साल में एक पेड़ हमारे इतने काम आता है

17.50 लाख रुपए की ऑक्सीजन का उत्पादन

41 लाख रुपए के पानी की रिसायक्लिंग।

300 पेड़ मिलकर खत्म कर सकते हैं एक वयस्क व्यक्ति द्वारा जीवन भर में फैलाए गए प्रदूषण को

35 लाख रुपए के वायु प्रदूषण का नियंत्रण

3% के लगभग तापमान कम करता है।

3 किलो कार्बनडायआक्साइड सोखता है हर साल

18 लाख रुपए के जमीन के कटाव खर्च पर रोक

7 औषधीय पौधे अवश्य लगाए
7 वृक्ष लगाकर जीवन का कर्ज चुकाए

छुट्टियों में यह भी कर लें : घूमने-फिरने तो आप जाते ही हैं। बस साथ में निम्बोली (नीम का फल), आम, जामुन या ऐसे ही बीज ले जाएं और रास्ते में जो जगह आपकी यादगार या पसंद की जगह हो वहां इन्हें फेंकते चले। बारिश आएगी तब देखना कि आपके बीजों से वृक्ष और फिर वृक्षों से वन-जंगल समृद्ध होते जाएंगे।

hindkush.in से साभार

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

माता-पिता घर की छत हैं उन्हें बोझ न समझें

– सरिता गुप्ता

अगर आज युवा वर्ग संयुक्त परिवार का निर्माण करने का प्रयास करें तो बिना किसी प्रयास के आने वाली पीढ़ी सभ्य एवं संस्कारी हो जायेंगी और माता-पिता को परिवार का ही हिस्सा समझें तो सारी परेशानियाँ सुबह की धुंध की तरह उड़ जायेंगी। फिर देखो घर किस प्रकार खुशियों की महक से महकता है। ये याद रखो जिस घर पर छत नहीं होती उस घर को किसी आपदा से नहीं बचाया जा सकता चाहे दीवारें कितनी ही मजबूत क्यों न हों। माता-पिता घर की छत हैं। उन्हें बोझ मत समझो बल्कि अपना सौभाग्य समझो क्योंकि जब तक हमारे बड़े हमारे साथ होते हैं तब तक जिन्दगी एक नगमे की तरह गुनगुनाती है, जीवन में खुलकर हंस सकते हैं। मगर जब हमारे ऊपर घर के बड़े व्यक्ति की तख्ती टंग जाती है तो हमारी जिम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं, हर वक्त बड़े होने का एहसास हमें गम्भीर बना देता है, धीरे-धीरे हम हंसना-बोलना भूल जाते हैं। इसलिए जब तक माता-पिता की शीतल छांह में बैठने का मौका मिले, तब तक अपना बचपन महसूस करो, समेट लो सुखद क्षणों को मीठी यादों के रूप में। माता-पिता की इतनी सेवा करो कि उनकी दुआओं से इहलोक तथा परलोक दोनों सुधार लो यही सच है।

माँ बाप एक ऐसा सम्बल हैं जिनकी छत्रछाया में रहते हुए एक बालक अपने को सदैव सुरक्षित एवं गौरवान्वित महसूस करता है। एक बच्चे के गर्भ में आते ही हर माँ-बाप की खुली आँखों में एक सपना पलने लगता है बच्चे की किलकारी और सुन्दर भविष्य।

माँ-बाप जीवन की वह अमूल्य पूँजी हैं जिसके समक्ष जीवन के सारे सुख, सारी दौलत छोटी लगती हैं। माँ-बाप ही हैं जो हमें इस सुन्दर सृष्टि को देखने के लिए इस संसार में लाते हैं। बहुत खुशनसीब हैं वे बच्चे जिनका बचपन माँ के आंचल तथा पिता के साए में बीतता है। माँ-बाप आजीवन बच्चे को कवच स्वरूप हर आपदा हर संकट से बचा कर रखते हैं। माँ रात भर जाग-जाग कर बच्चे को पालती है। पिता दिन भर मेहनत कर पसीना बहाकर जो भी कुछ कमाता है अपने बच्चे की एक किलकारी पर एक मुस्कराहट पर न्यौछावर कर देता है। अपने बच्चों के खिलौनों पर खर्च करने में एक पिता असीम खुशी एवं सन्तुष्टि का अनुभव करता है। उन खिलौनों से उसका पेट नहीं भरता। पर हाँ बच्चे को खुश देख आत्मा अवश्य तृप्त हो जाती है।

मगर एक बहुत पुरानी कहावत है – 'जिसके पैर न फटी बिवाई वो क्या जाने पीर पराई'। जो बच्चे बचपन से लेकर अधेड़ उम्र तक माँ-बाप के साए में पले-बढ़े हों वे माता-पिता के महत्त्व को समझ नहीं पाते और वृद्धावस्था में उन्हें अकेले छोड़ देते हैं। वृद्धावस्था से जूझने के लिए उन्हें वृद्धाश्रम में भेज देते हैं। यदि साथ रहते भी हैं तो उनको साथ नौकरों जैसा व्यवहार किया जाता है। आज एक नहीं बल्कि घर-घर की यही कहानी है कि हर माता-पिता जीवन की संध्या बेला में अपने बच्चों के साथ रहने का अरमान पूरा नहीं कर पाते। अपने पोते-पोती के साथ खेलने के सुख से उन्हें वंचित रखा जाता है। आज के बच्चे युवा होने पर अपने बच्चों के प्रति जिम्मेदारी समझते हैं, माता-पिता के प्रति अपने कर्त्तव्य को भूल जाते हैं।

माता-पिता का महत्त्व उन बच्चों से पूछो जो इस दुनिया में आँखें जब खोलते हैं तो स्वयं को एक अनाथालय में पाते हैं। जिन्होंने कभी माँ की गोद में सिर नहीं रखा, कभी माँ के मुँह से लोरी नहीं सुनी, कभी माँ के हाथ से रोटी नहीं खाई, पिता की उंगली पकड़ कर चलना नहीं सीखा, पिता के कंधे पर चढ़कर घोड़ा बनकर नहीं खेले बल्कि बचपन से उन्हें गिर-गिर कर चलना सिखाया, जिनकी आँखें माँ-बाप की करुणा मात्र से ही नम हो जाती हैं वे बच्चे अन्य बुजुर्गों की सेवा कर अपने मन को सन्तुष्ट करते हैं और मन में दु:ख का अनुभव करते हैं कि वे अपने माता-पिता से दूर हैं, जिन्होंने उन्हें जन्म दिया क्योंकि विधाता के क्रूर हाथों ने उन्हें उनसे छीन लिया।

बड़े दु:ख की बात है आज युवा वर्ग में धर्म के प्रति श्रद्धा कहाँ या दिखावे की प्रवृत्ति पूरी नजर आती है। मंदिरों में जाकर दुर्गा माँ को छत्र चढ़ाते हैं, चुनरी चढ़ाते हैं, बड़े-बड़े भंडारे करते हैं, जगराता कराते हैं पर घर में अपनी माँ की फटी साड़ी देख लाज नहीं आती, माता-पिता को साथ रखने से, उनके दो वक्त की रोटी से उनका घर का बजट बिगड़ जाता है। अक्सर यही सुना जाता है इतनी मंहगाई में दो आदमी का अतिरिक्त खर्च..... बहुत मुश्किल है।

यदि दो भाई हैं तो बड़ी आसानी से घर की वस्तुओं की तरह माँ-बाप का भी बंटवारा कर दिया जाता है जो अपने बच्चे की एक इच्छा मुँह से निकलते ही पूरी करते थे, माता-पिता को दवाई लाना कितना अखरता है। उस वक्त वे भूल जाते हैं जिस तरह आज वे अपने बच्चों की चिन्ता करते हैं, इन बुजुर्गों ने भी अपनी जरूरतें काट-काट कर उन्हें आज इस योग्य बनाया है।

आज माता-पिता के प्रति सेवा का भाव कहीं भी देखने को नहीं मिलता। समझ नहीं आता वह कौन सी शिक्षा है, वह कौन सी संस्कृति है, वह कौन सा धर्म है जो माता-पिता की अवहेलना, अपमान की शिक्षा देता है। पौराणिक जगत में हर शुभ कार्य में गणेश जी का पूजन किया जाता है हम उनसे ऋद्धि-सिद्धि तथा सुबुद्धि की प्रार्थना करते हैं मगर भूल जाते हैं कि श्री गणेश को सर्वत्र एवं सर्व प्रथम पूजा का अशीर्वाद उन्हें अपने माता-पिता से ही मिला था।

सब जानते हैं जब कार्तिकेय और गणेश जी में तीनों लोक की परिक्रमा करने की शर्त लगी तो गणेश जी ने अपनी मूषक की सवारी पर बैठ शंकर-पार्वती की तीन परिक्रमा कर माता-पिता के चरण-स्पर्श कर कहा मेरी तीनों लोक की परिक्रमा पूर्ण हुई और शंकर-पार्वती के आशीर्वाद से वन गए विजयी तथा बुद्धिविनायक एवं सर्वत्र पूजनीय।

सोचो वे गणेश जिन्होंने अपने माता-पिता को सारा ब्रह्माण्ड समझा। वे गणेश भला उन भक्तों की सेवा कैसे स्वीकार करेंगे जो अपने माता-पिता का आदर नहीं करते, उन्हें आंसू, अपमान एवं दु:ख देते हैं। कदम-कदम पर उन्हें ये एहसास कराते हैं कि वे परिवार की एक अवांछित वस्तु हैं, बोझ हैं, परिवार के लिए। मानव जीवन ही एक ऐसा जीवन है जिसमें माँ-बाप मिलते हैं। यूँ तो हर जीव का जन्म माँ के गर्भ एवं पिता के कार्य से होता है। मगर पशु-पक्षी, कीट-पतंगे व अन्य सभी जीव माँ के गर्भ से जन्म लेने के कुछ दिन बाद ही पराए हो जाते हैं। उनके बीच रिश्तों की डोर नहीं होती, भावनाओं का व्यवहार नहीं होता है, एक-दूसरे के प्रति कोई फर्ज या अधिकार का नाता नहीं होता। एक मानव जीवन ही ऐसा जीवन है जिसमें हम माता-पिता की सेवा कर माता-पिता के ऋण से उऋण हो सकते हैं।

हमें यह बात सदैव याद रखनी चाहिए 'जैसी करनी वैसी भरनी'। आज हम जहाँ हैं कल उस जगह हमारे माता-पिता थे। मगर आज उनके साथ करेंगे कल वैसा ही हमारे साथ हमारे बच्चे करेंगे, क्योंकि इंसान अनुकरणीय प्रवृत्ति का है। ये जो देखते हैं वही सीखते हैं। इसलिए हमें बाल्यकाल से ही बच्चों के मन में घर के बुजुर्गों के प्रति आदर-सत्कार की भावना डालनी चाहिए। बड़ों के चरण स्पर्श, नमस्कार तथा सेवा करने की भावना जागृत करें।

उन्हें बताएं कुछ पाने के लिए झुकना जरूरी है। जब हम बुजुर्गों के चरण-स्पर्श करते हैं तो अनायास ही उनका हाथ हमारे सिर पर आ जाता है तथा मुख से आशीर्वचनों की झड़ी सी लग जाती है। हमारा रोम-रोम खुशी से भीग जाता है। ऐसी अमूल्य निधि हमें बिना किसी खर्च के, थोड़े से प्रयास से ही प्राप्त हो जाता है मगर हम अपनी नासमझी, अज्ञानता एवं अहम् के कारण उसे खो रहे हैं। माता-पिता का अशीर्वाद जीवन के कष्टों से हमारी रक्षा करता है। माता-पिता का आशीर्वाद कभी खाली नहीं जाता। महाभारत-रामायण जैसे धर्मग्रन्थ इस बात का प्रमाण हैं कि बिना माँ-बाप के चरण स्पर्श एवं आशीर्वाद के, किसी शुभ कार्य का श्री गणेश नहीं किया जाता था। इस अपनी की भीड़ में माता-पिता से अधिक शुभ-चिन्तक कोई हो ही नहीं सकता।

आज हम सबका फर्ज है कि अपने बच्चों के मन पर अपने चरित्र एवं संस्कारों की छाप ऐसी छोड़ें कि आपका मन-भरपूर खुशी से नाच उठे। पृथ्वी गोल है। आज हमें अपने बच्चों की परवरिश इस प्रकार करनी है कि वे सभ्य, आधुनिक एवं संस्कारी बनें।

एक पूर्ण जीवन वही जीता है जो माता-पिता की सेवा करता है। जीवन की संध्या बेला में हर माता-पिता की एक आरज़ू होती है कि उनके मन आंगन में घर के चिराग की रोशनी सदा रहे। माता-पिता की दुआओं में बहुत असर है। माता-पिता कभी अपने बच्चों को बद्दुआ नहीं देते, चाहे वे कितने ही कष्ट में हों। मगर आज जो घरों में माता-पिता की दीन-हीन अवस्था हम देख रहे हैं तो ये कहना जरूरी हो गया है कि माता-पिता की आत्मा को इतना न सताओ कि उनके दु:खी मन से कोई बद्दुआ निकल जाए। माता का ऋण तो हम कभी उतार ही नहीं सकते। माता-पिता कोई सीढ़ी नहीं कि हम उन्नति के शिखर पर पहुँचकर नीचे देखना ही भूल जायें। माता-पिता इमारत की नींव हैं, पेड़ की जड़ें हैं। अगर नींव कमजोर होगी तो इमारत स्वत: ही हिल जायेगी।

माता-पिता की सेवा से परिवार रूपी वृक्ष में खुशियों के फल लगते हैं। गणेश जी प्रसन्न होते हैं तथा विघ्नों का नाश करते हैं। उनका आशीर्वाद युगों-युगों तक हमारी रक्षा करता है। अपने ही जीवन में अनेक ऐसे उदाहरण देखे हैं कि जो माता-पिता को अपमानित करते हैं, वे स्वयं भी कभी सुख का जीवन नहीं जी पाते। माँ-बाप और मानव जीवन बहुत पुण्य से मिलता है।

इस मौके को व्यर्थ न गंवाओ। ऐसी सेवा करो माँ बाप की कि उनके आशीर्वाद से हर जन्म में मानव रूप मिले। मैंने बचपन में एक सद् विचार पढ़ा था कि – 'माता-पिता के प्यार को हम माता-पिता बन कर ही समझ सकते हैं।' मगर आज शायद कलियुग का प्रभाव है कि माता-पिता बनने के बाद ही हम माता-पिता के प्रति अपनी जिम्मेदारी भूल जाते हैं।

हर माँ बाप अपने युवा पुत्र के साथ अपने जीवन के कुछ अनुभव बांटना चाहते हैं, कुछ सुखद क्षण बिताना चाहते हैं। मगर आज के युवा मंहगाई एवं छोटे घरों का वास्ता देकर या तो माता-पिता को अकेले छोड़ देते हैं या दो हंसों की जोड़ी का बंटवारा कर देते हैं। आज जब भी कहीं किसी बुजुर्ग व्यक्ति से बात करती हूँ तो उनके मन की कसक को अपने मन में महसूस करती हूँ। जिस वृक्ष की छांव की चाह में वे एक नन्हें से पौधे को ताउम्र सींचते रहते हैं, जीवन की शाम में उन्हें वृक्ष की छाया में नहीं बल्कि तनहाई के ताप में समय मन की पीड़ा के साथ बिताना पड़ता है।

अगर आज युवा वर्ग संयुक्त परिवार का निर्माण करने का प्रयास करें तो बिना किसी प्रयास के आने वाली पीढ़ी सभ्य एवं संस्कारी हो जायेंगी और माता-पिता को परिवार का ही हिस्सा समझें तो सारी परेशानियाँ सुबह की धुंध की तरह उड़ जायेंगी। फिर देखो घर किस प्रकार खुशियों की महक से महकता है। ये याद रखो जिस घर पर छत नहीं होती उस घर को किसी आपदा से नहीं बचाया जा सकता चाहे दीवारें कितनी ही मजबूत क्यों न हों। माता-पिता घर की छत हैं। उन्हें बोझ मत समझो बल्कि अपना सौभाग्य समझो क्योंकि जब तक हमारे बड़े हमारे साथ होते हैं तब तक जिन्दगी एक नगमे की तरह गुनगुनाती है, जीवन में खुलकर हंस सकते हैं। मगर जब हमारे ऊपर घर के बड़े व्यक्ति की तख्ती टंग जाती है तो हमारी जिम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं, हर वक्त बड़े होने का एहसास हमें गम्भीर बना देता है, धीरे-धीरे हम हंसना-बोलना भूल जाते हैं। इसलिए जब तक माता-पिता की शीतल छांह में बैठने का मौका मिले, तब तक अपना बचपन महसूस करो, समेट लो सुखद क्षणों को मीठी यादों के रूप में। माता-पिता की इतनी सेवा करो कि उनकी दुआओं से इहलोक तथा परलोक दोनों सुधार लो यही सच है।

सूर्य नमस्कार या ईश नमस्कार?

– विद्यासागर वर्मा, पूर्व राजदूत

लेखक भारतीय विदेश सेवा के सेवा निवृत्त सदस्य हैं। इन्होंने योगदर्शन पर काव्य व्याख्या लिखी है जिसका विमोचन उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त ने अप्रैल, 2002 में किया था। इन्होंने कज़ाख़स्तान में भारतीय दूतावास में कज़ाख़ लोगों को एवं वहाँ के राजनयिकों को योग की निःशुल्क शिक्षा दी। योग पर दिये प्रपाठकों को द्विभाषी पुस्तक (अंग्रेजी, रूसी भाषा में) के रूप में छापा गया।

सूर्य नमस्कार आसन के विषय में सम्पूर्ण भारत में एक विवाद खड़ा हो गया है, जिसका देश के हित में समाधान ढूंढ़ना आवश्यक है। अन्तरिम् रूप से भारत सरकार ने सूर्य नमस्कार आसन को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर भव्य सामूहिक कार्यक्रम से हटा दिया है।

सर्वप्रथम यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि केवल योग-आसन, योग नहीं। योग एक विस्तृत आध्यात्मिक पद्धति है जिसका ध्येय आत्मा और परमात्मा का मिलन है। पतंजलि ऋषि के योगदर्शन में आसन सम्बन्धी केवल चार (4) सूत्र हैं। आसन की परिभाषा है 'स्थिरसुखासनम्' अर्थात् सुख पूर्वक स्थिरता से, बिना हिले-डुले, एक स्थिति में बैठना आसन है ताकि अधिक समय तक ध्यान की अवस्था में बैठा जा सके। प्रचलित योग-आसन हठयोग की क्रियाएँ हैं। हठयोग के ग्रन्थों में पशु-पक्षी के आकार के 84 आसनों का वर्णन है, जैसे मयूरासन, भुजंगासन आदि।

Rev. Albert Mohler Jr. ...sident South Baptist ...osophical Society ने ...स्पष्ट शब्दों में योग को ...किया है, सराहने योग्य है ...ay be twisting ...o prestzels or ...rs, but if there ...editation or ...ction of ...usness, you are ...cting Yoga." अर्थात् ...प कितनी तरह से अपने ... को मरोड़कर एक बांस के ...मान (ताड़ासन) या एक शलभ के सामन (शलभासन) बनाकर बैठ जायें, यदि उस स्थिति में ध्यान की अवस्था नहीं है, चेतना की एकाग्रता नहीं है, उसे योग नहीं कह सकते।

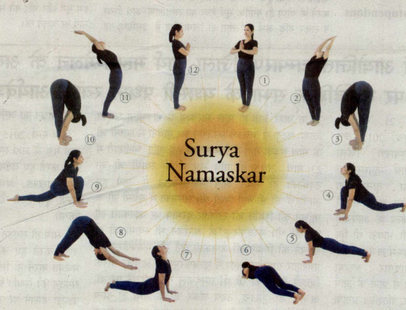

सारांश में हम कह सकते हैं कि योग ध्यान की उस स्थिति का नाम है जहां आत्मा का परमात्मा से तादात्म्य हो जाता है। इस स्थिति का वर्णन सभी धर्मों के ग्रन्थों में पाया जाता है। उदाहरणार्थ कुरान शरीफ में कहा गया है – **''न फि अन्फुसेकुम अ-फ-ल तुबसेरुन''** अर्थात् मैं तुम्हारी आत्मा में हूँ, तुम मुझे क्यों नहीं देखते? मैं तुम्हारी हर श्वास में हूँ परन्तु तुम पवित्र नेत्र से विहीन हो, इसलिए देख नहीं पाते। यही तो योग विद्या का संदेश है। अहिंसा, सत्याचरण चोरी न करना, दूसरों का हक न मारना, सभी शुभ कर्म ईश्वर की इबादत (ईश्वर प्रणिधान) भाव से करने से आत्मा पवित्र दृष्टि प्राप्त करता है और अपने अन्दर ईश्वर का साक्षात्का... है। अथर्ववेद (12.1.45) का कथन है '...**बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथि**...**कसम्**' अर्थात् पृथ्वी ...ले तथा देशकाल के अनुसार भिन्न-भिन्न भाषाएँ (Notions of Religion) का भिन्न-भि...करने वाले जन-समुदाय का भरण (पोषण) करती ...। विश्व के सभी धर्म सत्य, अहिंसा, भातृभाव, सदाचार की शिक्षा देते हैं ताकि मनुष्य का जीवन उत्कृष्ट बन सके और वे अन्ततः उस परमशक्ति से जुड़ सकें। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर सभी धर्मस्थलों पर ईश्वर है क्योंकि वह सर्वव्यापक है परन्तु तुम्हारी आत्मा केवल तुम्हारे शरीर में है, वहाँ नहीं है। मिलन तो किसी दो का तभी हो सकता है जहाँ दोनों मौजूद हों। वह स्थान केवल आपका शरीर है, वहीं आत्मा और परमात्मा का मिलन हो सकता है। तभी तो पवित्र बाईबल में लिखा है "Your Body is the Temple of God" अर्थात् आपका शरीर ही परमात्मा का पूजा स्थल है। यही योग विद्या का सार है।

आसन और प्राणायाम योग के बहिरंग (Outer Shell) माने गये हैं। ये योग साधना में सहायक होते हैं जैसे आसन शरीर को निरोग रखते हैं और प्राणायाम मन की एकाग्रता को बढ़ाते हैं। योग का सम्बन्ध शरीर, मन और आत्मा से है। प्रकृति ने मानवमात्र को एक जैसा पैदा किया है, सभी को शरीर, मन और आत्मा दी है। मनुष्य चाहे साईबीरिया में पैदा हो जहाँ तापमान (-)50 डिग्री सैल्सियस होता है चाहे सहारा के

मरुस्थल में पैदा हो जहाँ तापमान (+) 50 डिग्री सैल्सियस होता है, मानव शरीर का तापमान सदा और सभी स्थानों पर (+) 37 डिग्री सैल्सियस ही होता है। इसी प्रकार मनुष्य चाहे अमेरिका का रहने वाला हो या अफ्रीका का, क्रोध के आवेश में उसका रक्तचाप बढ़ जाता है, हृदयगति तेज हो जाती है, नब्ज़ भी तेजी से चलने लगती है और चेहरा लाल हो जाता है। जैसे कोई भी दवाई या बीमारी किसी के शरीर पर असर करने से पहले उसकी नागरिकता या धार्मिक आस्थाओं की जानकारी नहीं लेती, इसी प्रकार योग की क्रियाएँ मानवमात्र पर एक सा प्रभाव छोड़ती हैं। हाँ, जो अधिक निष्ठा से इन्हें करेगा, उसे अधिक लाभ होगा, जो टूटे मन से करेगा, उसे कम लाभ होगा। यह व्यवस्था सभी विद्याओं पर एक सी लागू होती है।

योग-पद्धति एक धर्म निरपेक्ष्य, मानवमात्र हितकारी पद्धति है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। यह बात इसी से सिद्ध हो जाती है कि संयुक्त राष्ट्र की जनरल एसेम्बली में 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित करने सम्बन्धी प्रस्ताव न केवल सर्वसम्मति से पारित हुआ बल्कि 177 देशों द्वारा अनुमोदित किया गया जिसमें मुस्लिम देश संगठन (OIC) के भी अधिकतर देश सम्मिलित थे। इससे पूर्व कैलीफोर्निया की एक अपील अदालत ने न्याय व्यवस्था दी कि सैनडीएगो काऊँटी के स्कूलों में सिखाए जा रहे योग से धार्मिक स्वतन्त्रता का उल्लंघन नहीं हो रहा। दैनिक हिन्दी समाचार 'हिन्दुस्तान' दिनांक 5 अप्रैल, 2015 एवं अंग्रेजी समाचार पत्र 'टाइम्स ऑफ इंडिया' दिनांक 5 अप्रैल, 2015 में छपे समाचार के अनुसार तीन सदस्यीय अपील अदालत ने योग के कार्यक्रम को धर्मनिरपेक्ष्य घोषित किया। इससे भी पूर्व अमेरिका के एक राज्य 'इलिनॉइस' की संसद ने 24 मई, 1972 के दिन एक प्रस्ताव (संख्या-677) पारित किया जिसमें योग की ध्यान पद्धति का गुणगान करते हुए इसे राज्य की सभी शिक्षा संस्थाओं में सिखाने के लिए अनुरोध किया गया एवं इसकी परियोजनाओं के लिए हर सम्भव योगदान देने का निर्देश दिया गया। इस प्रस्ताव में कहा गया कि अनुसंधानों से पाया गया कि ध्यान से मानसिक तनाव का कम होना, उच्च रक्तचाप का नीचे आना, श्वास रोग का ठीक होना, ध्यान लगाने वाले छात्रों का अध्ययन में प्रगति करना, अनगिनत रोगों में रोगियों का ध्यान लगाने से अन्यों की अपेक्षा शीघ्र ठीक होना, अफीम आदि के व्यसनियों (Drug Addicts) का ध्यान लगाने से व्यसन से छुटकारा पाना आदि लाभ प्राप्त होते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि सूर्य नमस्कार को लेकर समस्त योग विद्या को त्याज्य समझना उचित नहीं। वस्तुतः सभी मुस्लिम भाई ऐसा समझते भी नहीं हैं। हाँ, जो सूर्य नमस्कार आसन को आपत्तिपूर्ण मानते हैं, उनकी आपत्ति वाजिब है, उचित है। इस्लाम में जड़ की उपासना एवं ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य की उपासना धर्म-विरुद्ध है। इस विचारधारा का सभी को सम्मान करना चाहिए। इसी के साथ-साथ समस्या का समाधान भी ढूंढ़ना चाहिए। भारत सरकार ने जो समाधान ढूंढ़ा है कि सूर्य नमस्कार को ही योगासनों से हटा दिया जाए, केवल क्षणिक, अल्पकालीन उपाय है, चिरस्थायी नहीं।

योग आसनों में तीन आसन स्वास्थ्य की दृष्टि से अतीव महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। वे हैं – शीर्षासन, सूर्य नमस्कार आसन और सर्वांगासन। इन तीनों से शरीर के समस्त अंग-प्रत्यंग सुचारू रूप से कार्य करते हैं और सुदृढ़ होते हैं। अतः सूर्य नमस्कार आसन को सदा के लिए बहिष्कृत करना उचित नहीं होगा।

सूर्य नमस्कार आसन पर विवाद इसलिए है कि इसमें जड़ पदार्थ सूर्य के सामने सिर झुकाया जाता है। मेरा मत है कि यहाँ सूर्य का अर्थ सूर्य है ही नहीं, यहाँ सूर्य का अर्थ ईश्वर है। वेद में, संस्कृत भाषा में एवं अन्य भाषाओं में एक शब्द के एक से अधिक अर्थ होते हैं। वेदों में ईश्वर को सूर्य, अग्नि, इन्द्र, विष्णु आदि कई नामों से वर्णित किया गया है। इसकी पुष्टि वेदों का जर्मन भाषा में अनुवाद करने वाले विश्वविख्यात दार्शनिक प्रो. एफ. मैक्समूलर भी करते हैं। अपनी पुस्तक 'India What It Can Teach Us? में वे कहते हैं "They (The Names of Deities like Indra, Varuna, Surya) were all meant to express the Beyond. the Invisible behind the Visible, the Infinite within the Finite, the Supernatural above the Natural, the Divine, Omnipresent, Omnipotent." अर्थात् वे (इन्द्र, वरुण, सूर्य आदि देवता वाचक शब्द) सभी परोक्ष के द्योतक थे, दृश्य के पीछे अदृश्य, सान्त के पीछे अनन्त, अपरा के पीछे परा, दिव्य, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान के द्योतक थे।

प्रो. एफ. मैक्समूलर की उपरोक्त घोषणा वेद के अन्तः साक्ष्य से भी सिद्ध

अगले पृष्ठ पर जारी है

पिछले पृष्ठ का शेष

सूर्य नमस्कार या ईश नमस्कार ?

होती है। यजुर्वेद (7.42) का कथन है **सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च** अर्थात् सूर्य इस चेतन जगत् एवं जंगम (स्थावर) जगत् की आत्मा है। सूर्य तो स्वयं जड़ है और इस समस्त स्थावर जगत् का एक तुच्छ भाग है। वह जड़ एवं चेतन जगत की आत्मा (चेतन सत्ता) कैसे हो सकता है? नक्षत्र विज्ञान बतलाता है कि सूर्य हमारी आकाश गंगा (Milky Way Galaxy) का एक सामान्य तारा (Star) है, जिसमें अरबों तारे हैं। इतना ही नहीं, सारे ब्रह्माण्ड (Universe) में अरबों ऐसी और इससे भी कई गुना बड़ी आकाश गंगाएँ हैं। इतने विशाल ब्रह्माण्ड की आत्मा एक अधना-सा सूर्य नहीं हो सकता। इससे सुस्पष्ट हो जाता है कि यहाँ सूर्य का अर्थ ईश्वर है। इसके अतिरिक्त हमारे धर्म ग्रन्थों में यह भी कहा गया है कि वे सूर्य, तारे, अग्नि आदि सभी उसी ईश्वर के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं - **''तस्यभासा सर्वमिदं विभाति''** कठोपनिषद् (2.2.15) अर्थात् उस ईश्वर के प्रकाश से यह सब कुछ प्रकाशित हो रहा है।

ईश्वर ही ब्रह्माण्ड की आत्मा है, केवल वेद ही नहीं कहता, अन्य सभी धर्म भी ऐसा ही मानते हैं, बड़े-बड़े दार्शनिक एवं वैज्ञानिक भी ऐसा ही मानते हैं। उदाहरणार्थ -

(1) हक जाने जहान अस्त व जहान जुमला बदन।

- सूफ़ी शायर

ईश्वर विश्व की आत्मा है और यह समस्त विश्व उसका शरीर।

(2) The Universe is one stupendous Whole Whose Body Nature is, and God the Soul.

- Alexander Pope

यह ब्रह्माण्ड एक विशाल पूर्ण-कृति है। प्रकृति जिसका शरीर है और ईश्वर आत्मा।

- एलेक्जेंडर पोप

(3) अल्लाहो बे कुल्ले शमीन मुहित
अल्लाहो नूर उस समावाति वल अर्द।

- कुरान शरीफ़

अल्लाह समस्त संसार को घेरे हुए है और उसमें व्याप्त है। उसका नूर द्यौलोक एवं पृथ्वी को प्रकाशित करता है।

(4) God said let there be light and there was light.

- The Holy Bible

ईश्वर ने कहा कि प्रकाश हो जाए और प्रकाश हो गया।

- पवित्र बाईबल

(5) सरब जोतिमहिं जाकी जोत।

- गुरु ग्रन्थ साहब

सारांश में, सूर्य नमस्कार आसन में सूर्य शब्द ईश्वर का द्योतक है, अत: ईश्वर को नमस्कार करना सर्वमान्य है। वेद भी कहता है **'एक एव नमस्या'** अर्थात् केवल एक ईश्वर ही नमन करने के योग्य है। क्योंकि सूर्य शब्द का लाक्षणिक-अर्थ ईश्वर न लेकर रुढ़ि-अर्थ सूर्य-तारा ले लिया गया है, इसलिए यह भ्रम की स्थिति पैदा हुई है। ऐसा ही भ्रम 33 करोड़ देवताओं के बारे में है। वेद में 33 कोटि देवता कहे गये हैं। संस्कृत में कोटि शब्द के दो अर्थ हैं, पहला, संख्यावाचक अर्थ है करोड़ दूसरा, अर्थ है प्रकार जैसे उच्चकोटि का विद्वान्। वेदों में 33 प्रकार के पृथ्वी आदि देवताओं का वर्णन है न कि 33 करोड़ देवताओं का। यहाँ यह स्पष्ट कर देना भी प्रासंगिक है कि देव या देवता वह है जो देता है या चमकता है। प्रकृति पदार्थ जो हमें लाभ पहुंचाते हैं या चमकते हैं देवता कहलाते हैं। वे केवल उसी की शक्तियों को परिलक्षित करते हैं। तभी वेद में कहा गया है **''अस्मिन् सर्वे:देवा: एकवृत्तो भवन्ति।''** अर्थात् सभी देवता (प्राकृतिक शक्तियाँ) उसी ईश्वर में समा जाते हैं। कुरान शरीफ में भी कहा गया है ''हे परवर दिगार। ये सूरज, चाँद, सितारे हमारे लिये (तुम्हारी खिलकत के लिए) तुम्हारे हुक्म में काम कर रहे हैं। कुदरत की इन निशानियों को देख कर, तुम्हारी ताकत, हिकमत और कारीगरी का अन्दाज़ा लगा सकते हैं।''

अन्तत: मेरा विनम्र सुझाव है कि सूर्य नमस्कार आसन का नाम ईश-नमस्कार आसन रख दिया जाए। मुझे आशा है कि हमारे मुस्लिम भाईयों को इसमें आपत्ति नहीं होगी क्योंकि ईश नमस्कार का अर्थ है अल्लाह को सजदा **(Salutation to God)**। वैसे तो इसके साथ किसी प्रकार की प्रार्थना की आवश्यकता नहीं, अगर कोई करना भी चाहे तो निम्न प्रार्थना पर गौर किया जा सकता है - हे परमपिता! हमें शक्ति दो कि हम सूर्य और चाँद की भांति निरन्तर परोपकार के कल्याणकारी मार्ग पर चलते रहें।

मोतीहारी में आयोजित चम्पारण जिला आर्य महासम्मेलन के अवसर पर पाटलीपुत्र की धरती पर सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का पदार्पण

21 से 24 मार्च, 2015 तक चम्पारण जिला आर्य महासम्मेलन का ताना-बाना बुनते वक्त से ही जिला के आर्यजनों की भावना थी कि सम्मेलन को यादगार बनाया जाये। साथ ही इस सम्मेलन के माध्यम से प्रान्त के आर्य समाजों में आई जड़ता को समाप्त कर गतिशील बनाया जाए।

इसी भावना के तहत आर्यजनों की इच्छा बलवती हुई कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश इस सम्मेलन को संबोधित कर प्रान्त के आर्यजनों की धमनियों में 3-जी का संचार करें। आर्य महासम्मेलन के पुरोधा श्री महादेव जी ने स्वामी जी से सम्पर्क कर सम्मेलन में आने का अनुरोध किया। परन्तु स्वामी जी ने अपनी व्यस्तता के कारण आने में असमर्थता व्यक्त की। परन्तु महादेव जी कहाँ मानने वाले थे। महादेव जी ने आर्य समाज के उज्ज्वल भविष्य के स्वप्न द्रष्टा युवा शास्त्री मनोज जी से उन्होंने अपनी भावना प्रकट की। शास्त्री जी ने मुझसे कहा कि स्वामी जी का पदार्पण होने से बहुत अच्छा रहता। तुरन्त हम दोनों ने संयुक्त रूप से दूरभाष पर स्वामी जी से सम्पर्क कर अधिकार स्वरूप कम से कम एक दिन का ही समय देने का आग्रह किया। स्वामी जी ने अपने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद एक दिन का समय देने की स्वीकृति दे दी। फिर क्या था। पटना से मोतीहारी तक उल्लास का वातावरण बन गया।

23 मार्च, 2015 को इन पंक्तियों के लेखक, अरविन्द शास्त्री, ओम प्रकाश शास्त्री, फौजदार सिंह के अतिरिक्त अच्छी संख्या में आर्यजनों ने पटना हवाई हड्डे पर स्वामी जी के बाहर आते ही फूल-मालाओं से भावभीना स्वागत किया। पटना से तत्काल हम लोग इस भावना से स्वामी जी के साथ सड़क मार्ग से प्रस्थान कर गये ताकि मोतीहारी में 23 मार्च, 2015 के रात्रि सत्र में भी स्वामी जी का उद्बोधन हो सके। आर्य महासम्मेलन में आये हुए आर्यजनों की भी यही इच्छा थी। सम्मेलन में स्वामी जी के पहुँचने की स्थिति की लगातार दूरभाष पर जानकारी ली जा रही थी। मुज्जफरपुर के आर्यजन भी स्वामी जी के पहुँचने की स्थिति की जानकारी लेते रहे। मुजफ्फरपुर के प्रवेशद्वार रामदयालु नगर में मुज्जफरपुर के आर्यजन पलक बिछाये अधीर हो रहे थे। रामदयालु नगर पहुंचने पर डॉ. अजीत, डॉ. शैलेन्द्र, उदय शंकर जी के साथ ही अन्य आर्यजनों ने स्वामी जी को फूल-मालाओं तथा गुलदस्ता भेंटकर भावभीना स्वागत किया। साथ ही स्वादिष्ट लस्सी पिलाकर तृप्त किया। लोगों ने अपनी भावनाओं से स्वामी जी को अवगत कराया। स्वामी जी ने भी आर्य समाज के उन्नयन में भरपूर सहयोग करने का आश्वासन दिया।

आर्य महासम्मेलन के प्रधान महादेव जी ने एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ नगर से दो किलोमीटर पहले ही आकर स्वामी जी की अगवानी की। सर्वप्रथम उन लोगों ने मोतीहारी आर्य समाज का दिग्दर्शन कराया। मोतीहारी आर्य समाज का भवन, परिसर भी अपनी जीवंतता की कहानी स्वयं कह रहा था। आर्य समाज मंदिर से जल्दी ही हमलोग सम्मेलन स्थल की ओर प्रस्थान कर गये।

महासम्मेलन के प्रवेशद्वार पर बने भव्य तोरणद्वार पर ही स्वामी जी के साथ ही हमलोगों को भी गाड़ी से उतारकर वैदिक रीत्यानुसार तिलक लगाकर स्वागत किया गया तथा मंच तक पुष्प वृष्टि करते हुए स्वामी आर्यवेश जी की जय-जय कार करते हुए आसन ग्रहण कराया गया। जय-जयकार से सभा मंडप गुंजायमान हो गया। मंच पर जिला के विभिन्न आर्य समाजों एवं संस्थाओं के प्रधान/मंत्री ने स्वामी जी का फूल-माला पहनाकर अभिनन्दन किया। 11.30 बजे रात्रि तक श्रोता स्वामी जी के उद्बोधन का अमृतपान करते रहे।

24 मार्च, 2015 को प्रात: यज्ञ के पश्च[illegible] सभा मंच से आर्य समाज के उज्ज्वल अतीत का [illegible] चर्चा करते हुए वर्तमान में देश समाज में आई हुई गिरावट यथा पाखण्ड, अंधविश्वास, भ्रष्टाचार, नारी-उत्पीड़न, कन्या भ्रूण हत्या जैसी बीमारियों से लड़ने का आह्वान किया।

साथ ही संगठन में आई गिरावट का भी वेदना के साथ वर्णन करते हुए कहा कि आर्य समाज के संगठन को मजबूत करने के लिए कोई भी कुर्बानी देने को तैयार हैं। संगठन की स्थिति की जानकारी देने एवं उसके निदान पर प्रकाश डालने पर उपस्थित आर्यजनों ने करतल ध्वनि से उनकी बातों का समर्थन किया।

आर्य महासम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका का भी स्वामी जी द्वारा विमोचन किया गया।

24 मार्च, 2015 को अपराह्न 2.30 बजे पटना हवाई अड्डे पर स्वामी जी प्रस्थान किये। रास्ते में मुज्जफरपुर से पहले ही कांटी में मुज्जफरपुर के डॉ. अजीत अपने साथियों के साथ राह रोके खड़े थे। 10 मिनट के लिए ही जिला रेड क्रौस सोसाईटी चलने के लिए आग्रह करने लगे। यद्यपि प्लेन छूटने का खतरा भी सामने था, परन्तु स्वामी जी उनके आग्रह को ठुकरा नहीं सके। रेड क्रौस में पचासों गणमान्य [illegible] भ. पू. प्रशासनिक पदाधिकारियों आर्यजनों ने स्वामी जी [illegible] योजना की चर्चा [illegible]र्वक अभिनन्दन किया तथा कार्य

पटना हवाई अड्डे पर आ[illegible] बाजार, व्यापुर, बांकीपुर के आर्यजन तथा [illegible] आनन्द सभा के युवा मंत्री श्री मनोज शास्त्री जी ने भाव[illegible] विदाई दी। विदा लेते हुए स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज के उत्थान के लिए आप लोग जब भी कहेंगे सहयोग करने के लिए बराबर तत्पर रहूँगा।

- रामानन्द प्रसाद आर्य, संयोजक

गहरा रहे हैं भारतीय संस्कृति पर संकट के बादल

– डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी

अपनी भारतीय संस्कृति ऋषियों की बनाई संस्कृति है। सम्पूर्ण विश्व मानवता की अंत:प्रेरणा को श्रेष्ठ मार्ग में प्रेरित करने, अच्छे संस्कारों को विकसित करने की क्षमता इसमें कूट-कूटकर भरी हुई है। इसे दुर्भाग्य ही कहा जाना चाहिए कि इसका अर्थ आज खुदाई में प्राप्त प्राचीन खंडहरों को स्मृति चिन्ह नृत्य संगीत के कार्यक्रम या कुछ तथ्यों के पढ़ने-लिखने तक ही समझा जाने लगा है। जबकि जीवन पद्धति कला कोशल, ज्ञान-विज्ञान, सामाजिक जीवन व्यापार संगठनों, उत्सव, पर्व, त्योहारों आदि के सम्मिलित स्वरूप से ही किसी संस्कृति का बोध होना चाहिए। प्राचीन ध्वंसावशेषों की खुदाई करके प्राचीन इतिहास एवं सांस्कृतिक गौरव की जानकारी हासिल करना जरूरी है, परन्तु इन्हीं तथ्यों को संस्कृति मान लेना, भारी भूल है। भारतीय संस्कृति तो निरन्तर विकासशील जीवन पद्धति रही है, इसे इन संकीर्णताओं में नहीं बांधा जा सकता। इतिहास के रूप में उसे एक अंग स्वीकार किया जा सकता है।

इन दिनों सांस्कृतिक कार्यक्रमों के नाम पर नृत्य संगीत के कार्यक्रम होते देखे जाते हैं। यद्यपि नृत्य, संगीत कला, आमोद-प्रमोद भी हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग हैं, किन्तु इन्हें ही सांस्कृतिक आदर्श मानकर चलना संस्कृति के बारे में अज्ञान प्रकट करना है। भारतीय संस्कृति केवल नृत्य गायन तक ही सीमित नहीं हैं। इसमें जहां आनन्द उल्लास का जीवन बिताने की छूट है, वहीं दूसरी ओर जीवन के गंभीर दर्शन से मनुष्य को महामानव बनने का भी प्रावधान है। यहाँ के प्राचीन ऋषि मनीषी एक ओर जहां कला के साधक होते थे, वहीं दूसरी ओर जीवन व जगत के सूक्ष्मतम रहस्यों के उदगाता द्रष्टा भी होते थे। पर्व त्योहारों के रूप में सामूहिक आनन्द उल्लास का जीवन भी बिताया जाता था, तो सामाजिक, राजनैतिक सुधारों पर ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में गंभीर विचार-विमर्श भी होता था। इस प्रकार की थी हमारी प्राचीन संस्कृति।

पाश्चात्य संस्कृति का बढ़ता प्रचार अभियान भारतीय संस्कृति हेतु सबसे बड़ा खतरा है। यद्यपि प्रारम्भ तभी से हो गया था, जब अंग्रेज यहाँ पर आये थे। अपने शासनकाल में उन्होंने सभी प्रकार से अपनी सभ्यता के प्रसार की नींव रखी और उसे सुदृढ़ आधार प्रदान किए। ईसाई मिशनरियों के द्वारा प्रचार और स्कूल कॉलेजों में शिक्षा के माध्यम से ईसाई धर्म का प्रचार भारत में प्रारम्भ किया और संप्रति यह अमर बेल की भांति बढ़ता ही जा रहा है, कम नहीं हो रहा है।

> **पाश्चात्य संस्कृति के इस प्रचार अभियान के कारण प्रतिवर्ष लाखों भारतीय धर्म परिवर्तन कर ईसाई या अन्य मतावलम्बी बनते जा रहे हैं। स्वदेशी रहन-सहन, भाषा, भाव, विचारों का परित्याग करके वे अपने धन को पानी की भांति बहा रहे हैं। जनसेवा के लिए चलाये जाने वाले समस्त मिशनरी चर्च, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, सेवा संस्थाएँ आदि मूल रूप से उनकी संस्कृति के प्रचार-प्रसार के माध्यम हैं। इस बहाने से भारतीयों की आस्थाओं को नष्ट किया और उन्हें बहला-फुसला कर नौकरी विवाह शिक्षा तथा अन्य वस्तुओं का लाभ और लोभ देकर अपनी संस्कृति के रंग में रंगा जा रहा है। पिछड़े एवं आदिवासी बहुल क्षेत्रों से ईसाई मिशनरी पूरे जोर-शोर से अपना काम कर रही है। मात्र सेवा तक ही उनका कार्यक्षेत्र सीमाबद्ध होता, तो कोई बात थी किन्तु जब यह परिधि बढ़ती हुई हमारी मूल जड़ों को आघात पहुंचाने लगती है, तो महसूस होता है कि समाज को कितनी बड़ी क्षति इस प्रकार हो रही है।**

पाश्चात्य संस्कृति के इस प्रचार अभियान के कारण प्रतिवर्ष लाखों भारतीय धर्म परिवर्तन कर ईसाई या अन्य मतावलम्बी बनते जा रहे हैं। स्वदेशी रहन-सहन, भाषा, भाव, विचारों का परित्याग करके वे अपने धन को पानी की भांति बहा रहे हैं। जनसेवा के लिए चलाये जाने वाले समस्त मिशनरी चर्च, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, सेवा संस्थाएँ आदि मूल रूप से उनकी संस्कृति के प्रचार-प्रसार के माध्यम हैं। इस बहाने से भारतीयों की आस्थाओं को नष्ट किया और उन्हें बहला-फुसला कर नौकरी विवाह शिक्षा तथा अन्य वस्तुओं का लाभ और लोभ देकर अपनी संस्कृति के रंग में रंगा जा रहा है। पिछड़े एवं आदिवासी बहुल क्षेत्रों से ईसाई मिशनरी पूरे जोर-शोर से अपना काम कर रही है। मात्र सेवा तक ही उनका कार्यक्षेत्र सीमाबद्ध होता, तो कोई बात थी किन्तु जब यह परिधि बढ़ती हुई हमारी मूल जड़ों को आघात पहुंचाने लगती है, तो महसूस होता है कि समाज को कितनी बड़ी क्षति इस प्रकार हो रही है। जांच पड़ताल करने वालों ने इस सम्बन्ध में बड़े सनसनीपूर्ण तथ्य उजागर किए हैं जो हमारी सांस्कृतिक गरिमा को नष्ट करने हेतु काफी हैं।

मिशनरी स्कूलों में आरम्भ से ही बच्चों के सुकोमल मन पर पाश्चात्य संस्कृति की छाप डाल दी जाती है, जो कालांतर में उनके संस्कार में सम्मिलित होती जाती है। उन विद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली कितनी ही पुस्तकों में भारतीय संस्कृति के नायक राम और कृष्ण के सम्बन्ध में अनास्था उत्पन्न करने वाले अनर्गल विचार पाये जाते हैं। इस तरह के प्रयास हिन्दू संस्कृति के प्रति आस्था नष्ट करके अपने धर्म के प्रति लोगों की भक्ति जगाने का प्रयास ही है। अपने धर्म को कल्याणकारी बताकर ईश्वर विशेष की पूजा करने तथा धर्म परिवर्तन करने का कुचक्र इन मिशनरियों द्वारा सम्पूर्ण विश्व में निर्बाध रूप से चलाया जा रहा है। भारतीय समाज भी अछूता नहीं रहा। इसका एक बड़ा भाग आज ईसाई बनकर अपनी प्रेरणा और जीवन पद्धति का आधार पश्चिम को मानकर चलता है। यह लोग अपने ही देश में इस तरह रहते हैं मानो विदेशी हो। यह कैसी विडंबना है?

हमारी संस्कृति के लिए जहां विदेशी मिशनरियों के प्रचार-प्रसार का खतरा है, वहां उससे कम खतरा अपने स्वयं के पश्चिमी अनुकरण के प्रयास का भी नहीं है। हम लोगों में से अधिकतर व्यक्ति अपने रहन-सहन, जीवन पद्धति, विचारों की प्रेरणा के लिए पश्चिम की ओर देखते हैं। उनका अनुकरण करते हैं। जहाँ तक अपनी संस्कृति का प्रश्न है, हम उसे भूलते जा रहे हैं। आज हमारी बोली, भाषा, वस्त्र रहने का ढंग पाश्चात्य बनता जा रहा है।

स्वच्छ और सादा ढीले वस्त्र जो हमारी भौगोलिक स्वास्थ्य सम्बन्धी परिस्थितियों के अनुरूप थे, उनकी जगह पाश्चात्य पहनावे का अनुकरण करके भारी गर्मी में भी हम कसे हुए जींस सूट जैसे वस्त्र पहनते हैं। आज प्राय: पूरा शिक्षित समाज वस्त्रों की दृष्टि से पाश्चात्य बन गया है। धोती कुर्ता पहनने में बहुत से लोगों को न केवल संकोच होता है वरन् कितने ही संस्थान देश में ऐसे भी हैं जहां इस तरह के वस्त्र धारण करने वालों को प्रवेश भी नहीं करने दिया जाता।

आज अपने देश में सब विपरीत हो रहा है। कला हो या साहित्य, प्रत्येक क्षेत्र में अंधानुकरण की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें वहां के साहित्य का अध्ययन नहीं करना चाहिए, वह तो प्रत्येक विचारशील पुरुष के लिए आवश्यक है, किन्तु अपने मौलिक सांस्कृतिक तथ्यों, प्रेरणाओं को भुलाकर पश्चिम का अंधानुकरण करना हमारी संस्कृति के लिए बड़ा खतरा है। इससे वह कमजोर होती है।

इससे भी बड़ी बात यह है कि हमारे मन में भी अपनी संस्कृति का गौरव नष्ट होता जा रहा है। भारतीय कहलाने में सीना तन नहीं जाता। अपनी संस्कृति के प्रति हममें भक्ति भावना, निष्ठा, आज वह नहीं रही है। जिसके लिए हमारे पूर्वजों ने अगणित कष्ट सहे थे बड़े-बड़े प्रलोभनों को ठोकर मार दी थी। भारतीय मनीषियों के लिए यह समय की सबसे बड़ी चुनौती है कि वह अपनी संस्कृति को न केवल नष्ट होने से बचाए, अपितु उसके उत्कर्ष एवं प्रचार-प्रसार के लिए प्रत्येक संभव प्रयास करे। यह तभी संभव है जब हम उसके प्रति आस्थावान बने। सांस्कृतिक मूल्यों को अपने जीवन में उतारे और उस रास्ते पर चलने के लिए अन्यान्यों को प्रेरित करें, उनका मार्ग दर्शन करें।

(नवोत्थान लेख सेवा, हिन्दुस्थान समाचार से साभार)

हर घर में रखने योग्य श्रेष्ठ पुस्तक
'चिकित्सा भास्कर'
लेखक – वैद्य इन्द्रदेव
सम्पादक – मधुर शास्त्री

चरक संहिता के अनुसार रोग एवं उनकी चिकित्सा – रोगों का निदान, अनेक अनुभवी संन्यासी, महात्मा तथा जन साधारण के अनुभव के आधार पर गुप्त रोगों पर किए गए प्रयोग, निर्धन, धनी व्यक्तियों के लिए शास्त्र प्रमाण अनुभव द्वारा पुष्ट, आयुर्वेद चिकित्सा का प्रामाणिक एवं सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। अतः सभी ग्राहकों के हित में निवेदन है कि वे उपरोक्त पुस्तक को खरीदने के लिए प्रकाशक से सीधा सम्पर्क करें।

मूल्य 200/- रुपये, डाक व्यय नि:शुल्क।

प्राप्ति स्थान – मधुर प्रकाशन
2804, बाजार सीताराम, दिल्ली-110006
– मधुर शास्त्री, मो.:-9810431857

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

लागत मूल्य 3100/- रुपये

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें नि:शुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है
10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

8 POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 17–18 जुलाई, 2015
प्रकाशन की तिथि : 16 जुलाई, 2015 वैदिक सार्वदेशिक
16 से 22 जुलाई, 2015
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

यज्ञ महिमा

ऋतं शंसन्त ऋजु दीध्याना दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः।
विप्रं पदमंगिरसो दधाना यज्ञस्य धाम प्रथमं मनन्त।।

—ऋ० १०/६७/२ ; अथर्व० २०/६१/२

ऋषिः—अयास्यः।। देवता—बृहस्पतिः।। छन्दः—निचृत्त्रिष्टुप्।।

विनय—'यज्ञ–यज्ञ' सब कहते हैं, परन्तु यज्ञ के मूलतत्व की जानने वाले कोई विरले ही होते हैं। हम तो इतना जानते हैं कि जगत्–हित के लिए स्वार्थत्याग के कार्य करना यज्ञ है। इतना तीक भी है, परन्तु यज्ञ के प्रथम रूप से हम बहुत दूर हैं। यदि हमें कहीं वह रूप दीख जाए तब तो हम देख लें कि यज्ञ ही हमारा प्राण है, हमारा जीवन है, यज्ञ तो हमारे एक–एक श्वास में होना चाहिए। इस यज्ञ के 'प्रथम धाम' (मुख्य स्थान) को जो साक्षात देख लेते हैं वे अंगिरस् कहाते है, क्योंकि ऐसे लोग इस जगत्–शरीर के अंगों के रस होते हैं। ये वे महात्मा पुरुष होते हैं जो संसार को ठीक रास्ते पर ले–जाते हुए संसार के प्राणरूप होते हैं। संसार में जो पाप, अधर्म और स्वार्थ की शक्तियाँ प्रवृत्त हो रही है उनसे संसार का जीवन–रस सूख जाए यदि ये 'अंगिरस्' उसमें निरन्तर धर्म–धारा न बहाते रहें। इन अंगिरसों को बार–बार प्रणाम है।

परन्तु हमें तो यह जानना चाहिए कि ये 'अंगिरस' महात्मा कैसे बनते हैं? इनके लक्षण क्या हैं? इनके चार लक्षण हैं– (१) ये सत्य ही बोलते हैं, ये सत्य का ही वर्णन करते हैं। (२) केवल इनकी वाणी में ही सत्य नहीं होता किन्तु इनके ध्यान व विचार में भी कुटिलता नहीं आने पाती, इनके विचार में–मनमें–भी असत्यता नहीं आती (अतएव) इनकी बुद्धि इतनी सच्ची और प्रकाशपूर्ण होती है कि इन्हें समष्टि–बुद्धि–रूप जो 'द्यौ' है उसके पुत्र कहना चाहिए, और (३) ये वीर–पुत्र होते हैं, क्योंकि संसार सदा अज्ञान–शत्रु पर विजय पाने के लिए अग्रसर रहता है, (४) और ये 'द्यौ के पुत्र' अपने में 'विप्रपद' को, ज्ञानमय व्यापक पद को धारण किये होते हैं– भगवान् को, भगवान के एक ज्ञानमय व्यापक रूप को, अपने में धारण किये फिरते हैं।

हे यज्ञकर्मों द्वारा ऊँचे चढ़ने की इच्छा रखने वाले और यत्न करने वाले भाइयो ! अंगिरसों के इन चार लक्षणों को अपने में रमाते चलो, रमाते हुए बढ़ते चलो।

शब्दार्थ—**ऋतं शंसन्तः**=सत्य ही कहने वाले, **ऋजु दीध्यानाः**=अकुटिल ध्यान करने वाले, **असुरस्यः**=प्रज्ञावाले **दिवः**=दिव के, द्यौ के **वीराः पुत्रासः**=वीर पुत्र, **विप्रं पदं दधानाः**=और जो ज्ञानमय या व्यापक पद को धारण किये हुए हैं, ऐसे **अंगिरसः**=अंगिरस लोग **यज्ञस्य प्रथमं धाम**=यज्ञ के परम मुख्य स्थान को **मनन्त**=जानते हैं।

साभार–'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

आर्य युवा निर्माण शिविर, बड़ौत जिला बागपत (उ. प्र.) में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, उत्तर प्रदेश की इकाई के तत्वावधान में गत 7 से 13 जून, 2015 तक जनता वैदिक इण्टर कॉलेज बड़ौत के प्रांगण में आर्य युवा निर्माण शिविर का शानदार आयोजन किया गया। परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष वृ. रामपाल के पुरुषार्थ एवं प्रयत्न से आयोजित यह शिविर बेहद सफल एवं प्रभावशाली रहा। प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी शिविर में समय–समय पर बुद्धिजीवियों को आमंत्रित कर युवाओं को प्रेरित किया गया। कॉलेज प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री वीरेन्द्र पाल सिंह प्रिंसिपल यशपाल सिंह तोमर, मा. सोहन पाल आर्य, श्री सत्यवीर सिंह फौजी, प्रधान ग्राम सिरसली, श्री रामपाल सिंह, श्री राकेश आर्य पाली, श्री शिव कुमार आर्य (सबगा) आदि का शिविर में विशेष सहयोग रहा। ।। जून को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द जी, आचार्य सन्तराम जी आदि ने शिविरार्थियों को विशेष सम्बोधन देकर देश भक्ति, ईश्वर भक्ति तथा परोपकार आदि विषयों पर विचार प्रस्तुत किये। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने मनुष्य जीवन की सार्थकता पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि यह बेशकीमती मानव जीवन परमात्मा ने हमें खाने, पीने, मौज उड़ाने के लिए नहीं प्रदान किया है। सबका हित साधन करना ही परोपकार है। अपने जीवन में परोपकार को धारण करो और विचारों को पवित्र करो। स्वामी जी ने कहा कि यदि विचार से भ्रष्ट हुए तो आचार से भ्रष्ट हो जाओगे। आचार भ्रष्ट हुए तो विचार से भ्रष्ट हो जाओगे। विचार से आचार को सुधारा जा सकता है आचार और विचार दोनों भ्रष्ट हो गये तो पतन निश्चित है। आचार और विचार का सामंजस्य ही चरित्र कहलाता है और चरित्र की पूंजी सबसे बड़ी पूंजी है। स्वामी जी ने कहा अपने व्यक्तित्व के विकास के प्रति सजग रहें, चरित्रवान बनें, प्रकाशवान बनें। जीवन को व्यर्थ न खोयें। स्वामी जी ने शिविरार्थियों से सभी प्रकार के नशे, मांस, अण्डे एवं अन्य अभक्ष्य पदार्थों का सेवन न करने की प्रतिज्ञा करवाई।

13 जून को शिविर समापन अवसर पर क्षेत्र के अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित हुए उन्होंने युवाओं द्वारा किये गये व्यायाम प्रदर्शन की प्रशंसा की। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

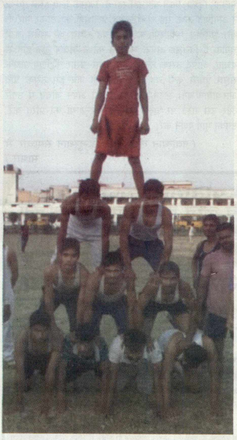

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

सार्वदेशिक सभा द्वारा राहत कार्य प्रारम्भ
नेपाल के भूकम्प पीड़ितों की दिल खोलकर सहायता करें

नेपाल में आये भयंकर भूकम्प से हुए जानमाल के नुकसान से आप भली–भांति परिचित ही होंगे। 25 अप्रैल को दोपहर 11.45 बजे 7.9 तीब्रता के ताकतवर भूकम्प के कारण नेपाल में जब पृथ्वी ने कांपना प्रारम्भ किया और जो तांडव शुरू किया उससे नेपाल देश का अधिकांश भाग विनाश की चपेट में आ गया। जगह–जगह मकान, पेड़–पौधे गिर गये और संचार माध्यम ठप पड़ गया। नेपाल की ऐतिहासिक धरोहरें तथा बड़ी–बड़ी बिल्डिगें ताश के महल की तरह धराशाई हो गई। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि भूकम्प कितना भीषण तथा विनाशकारी था। इस प्रलयंकारी भूकम्प के कारण नेपाल में जन–जीवन अस्त–व्यस्त हो गया है तथा कई हजार लोगों की जीवन लीला समाप्त हो गई है तथा हजारों लोग अपना घर–बार तथा अपना सब कुछ गंवा चुके हैं। घायलों की स्थिति और भी ज्यादा खराब है। भूकम्प का समाचार प्राप्त होते ही सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक आहूत की गई और राहत कार्यों के लिए चर्चा की गई। तत्काल नेपाल में काठमांडू स्थित आर्य समाज के माध्यम से पीड़ितों को राहत पहुँचाने का निर्णय लिया गया। नेपाल में दूर–दराज के इलाकों में जहां सब कुछ नष्ट हो गया है और वहाँ पर अभी तक कोई दल राहत के लिए नहीं पहुँचा है ऐसे स्थानों पर राहत पहुँचाने के लिए कदम उठाये जा रहे हैं।

आर्य समाज मानवता की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहा है। पूर्व में आये विभिन्न दैवीय प्रकोपों में आर्य समाज ने प्रशंसनीय राहत कार्य किया है। इस बार भी नेपाल में आये इस प्राकृतिक आपदा में पीड़ित मानवता को सहायता प्रदान करने के लिए सार्वदेशिक सभा ने बड़े पैमाने पर प्रयास प्रारम्भ कर दिये हैं तथा एक राहत दल नेपाल जाने के लिए तत्पर है।

सार्वदेशिक सभा ने देश की समस्त आर्य जनता से प्रार्थना की है कि पीड़ितों की सहायतार्थ वे आगे आयें और अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम चैक/ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा सीधे सार्वदेशिक सभा कार्यालय ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर भेजें। जिससे भूकम्प प्रभावित लोगों को सहायता तथा राहत पहुँचाई जा सके। आर्य समाज इस प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं में सदा ही अग्रणी रहा है। इस पुण्य कार्य हेतु आप सदैव की भांति इस आपदा में भी अधिक से अधिक सहयोग राशियाँ भिजवा कर सार्वदेशिक सभा के राहत कार्यों में सहयोग प्रदान करेंगे। जो कार्यकर्ता भूकम्प पीड़ित राहत कार्यों में सहयोग देना चाहते हैं उनका भी स्वागत है वे सभा कार्यालय में सम्पर्क करें।

आपके द्वारा दिया गया सहयोग पीड़ितों के लिए बहुत बड़ा सम्बल होगा।

स्वामी आर्यवेश
प्रधान

प्रो. विट्ठलराव आर्य
मंत्री

पं. माया प्रकाश त्यागी
कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

ई मेल :– sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in, aryavesh@gmail.com

दूरभाष :– 011–23274771, 23260985

Dev Maha Yajna

The performance of Dev Yajna ordained by the Supreme Being (Permeshwara) through the medium of the Vedas is a must. All the saints, sages and learned scholars of the Vedas have *laid a* great stress on the celebration of Dev Yajna, daily without fail. It was questioned to Maharishi Dayanand Saraswati ji as to what harm does it bring if it is not performed everyday. The Maharishi replied, "It's non performance leads a person to sinfulness. "What is the quantum of the sin" asked the devotee. The Swami replied to what extent the impurities come out of the body of a man or woman, pollute water and air and causing diseases to that extent, he/she is responsible for commiting the sin. In atonement to this, he *should contribute* so much or even more in the shape of incense, clarified butter and wood (Beri wood preferably) for the purification of air and water. If a person is given to eat and drink charified butter and nutrients, it would do good to one person only. But the amount of clarified butter and aromatic substances which an individual can make use of is sufficient to do good for thousands of persons through the medium of Dev Yajna. But Maharishi has advised that men and women should also take nutritious diet comprising, milk, pure ghee, vegetables, fruits and honey to build up their health. But at the same time and under all circumstances Dev Yajna (Agnihotra) should also be performed (Satyarth Prakash Chapter III). It should not be postponed to the next day, Maharishi has again emphasised that its non-performance makes a man a big sinner. The incense consumed for its performance comprises four things:

(1) Nutritious articles
(2) Curative articles
(3) Aromatic articles
(4) Sweet and strength giving articles.

For the daily performace of Dev Yajna, only 32 oblation are required to be offered in the sacred fire. The whole substance when consumed by fire is not kept in its possession. It is trasferred to the air by the sacred fire with the result that the air becomes fragrant. Eventually, the air offers to the clouds and the clouds pour water on the earth which helps a great deal in removing diseases which grow up in dietary plants, flowers, fruits and medicinal herbs. This is how the whole process is ordained by the Almighty Lord. Some people who are devoid of Vedic revelation hold the opinion that it does not behove of a wise man to waste things by burning them into the fire. It should be consumed by men. Such persons are quite ignorant about the Physical Science speaking of Chemistry. Dr. Draper of U.S.A. says that it has disposed of the idea of destruction and creation of matter. The science accepts without any hesitation the doctrine of imperishability of substance.

So, it has been sufficiently proved beyond all reasonable doubts that there is no destruction of any matter. The substance when put in the fire only changes the shape. so all the householders have been advised by our great Rishies and Yogies to perform Dev Yajna, daily, at home without fail. In good old days in India, when Dev Yajnas were performed on large scales with unflinching and implicit faith in God, people were not victims of so many diseases as are found today because Dev Yajna destroys all diseases which crop-up due to our neglect and for want of spiritual wisdom.

The Gita has strongly carroborated this view. The folowing slokas are quoted from the Gita which would prove that doing of the Yajna is a must in every house, regardless of caste and creed:

(१) सहयज्ञाः प्रजा सृष्ट्वा पुरावाच प्रजापति।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्।।
गीता ३/१०

God created the universe through the medium of Yajna and said as depicted in the Vedas, "You should augment the yajna and it would fulfill your desired objects"

(२) देवान्भावयतानेन ते देवा भवायन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।।

You should proptiate the Devtas and the Devtas, in turn would bring prosperity in abundance to you. Thus by fostering each other, you would attain the Supreme Happiness. Gita 3/11

(३) इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तानप्रदाभ्यैवयो यो भुङ्क्तेस्तेन एव सः।।

Fostered by the yajnas, the gods (Devtas) will give you the enjoyment you desire. He who enjoys these gifts without giving them is verily a thief. Gita 3/12

(4) The virtuous persons who eat what is left behind from the Yajnas are released from all sins but those wicked persons who prepare food for their own sake eat sin. Gita 3/13

(5) From food, creatures come into being and rain gives birth to food. Yajna produces rain and yajna is born of work immune from selfishness. Gita 3/14

(6) Except work done for the sake of Yajna, all works lead me to bondage. Therefore, all work should he done free from all attachments and fruit of action. The religious duty towards the Vedic gods here becomes service of creation in the name Supreme Being.

(7) & (8) It has been further advised by lord Krishna that sacrificed acts, gift and penance are not to be relinquished but should be performed because sacrifice, gift and penance are the purifiers of the *wise but these* works ought to be performed, giving up attachment and expectation of rewards. Lord Krishna says "It is my docided and final view. Gita 18/5 and 6

(9) Lord Krishna has emphatically drawn the attention of the Non-Doers of the Yajna, according to the Vedic conception. He further adds that those who do not act in accordance with the doctrines inculcated in the Vedas are verily the biggest sinners and being delighted in the sensual pleasures, their living on this earth is in vain and they are a burden On the society. Gita 3/16

From the above discussion and elucidation of the slokas from Gita, it can be well understood that the importance of Brahm Yajna cannot be minimised.

Regarding the other three Maha Yajnas, namely Pitar Yajna. Atithi Yajna and Baliveshavdev Yajna, I shall give a vivid picture of the three in my next issue.

Maharishi Dayanand Saraswati ji had been preaching the people to tread on the Vedic Path in order to attain the blissful peace of the Almighty Father for which he strived hard through out his life with as fearless and heroic mind.

चमकेंगे जब तलक सूरज वा चान्द, तारे।
पवित्र नाम रहेगा महर्षि का तब तक दिलो में हमारे।।

As long as the sun, the moon and the stars shine in the sky, the holy and pious name of the Maharishi would be remembered by our heart.

- D. D. Sharma, Amritsar, Punjab

आर्य युवा निर्माण शिविर का पलवल में हुआ आयोजन

आर्य समाज न्यू कालोनी पलवल में हरियाणा आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आर्य युवा निर्माण शिविर का भव्य आयोजन किया गया। शिविर का संयोजन स्वामी श्रद्धानन्द जी ने किया। शिविरार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए सोनू कुमार आर्य, कर्मपाल आर्य सहित अनेकों लोग उपस्थित रहे। 14 जून को समापन समारोह का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, ठाकुर विक्रम सिंह जी, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी, राधेलाल आर्य प्रधान वेद प्रचार मंडल, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री रवीन्द्र छावड़ा, प्रदीप छावड़ा प्रधान आर्य समाज श्रद्धानन्द नगर, कंवर रमेश कुमार पार्षद नगर परिषद्, जय प्रकाश आर्य, डॉ. धर्मपाल आर्य, श्री वी. के. आर्य, श्री सिमरन सिंह पटवारी, श्री भजन लाल आर्य, श्री पूर्ण सिंह आर्य, श्री सुमेर सिंह शास्त्री, श्री नेतराम शास्त्री, श्री हेतराम गर्ग, महाशय खेमसिंह आर्य, श्री चन्द्रपाल सिंह आर्य, श्री ठाकुर लाल आर्य, श्री दिनेश आर्य, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, आचार्य सन्तराम सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री प्रदीप छावडा प्रधान आर्य समाज श्रद्धानन्द नगर ने की।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में युवाओं को संस्कारित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आज युवा वर्ग पथ भ्रष्ट होता जा रहा है। आज युवाओं को जागरूक करने की अत्यन्त आवश्यकता है। स्वामी जी ने युवाओं का आह्वान किया कि जीवन में अच्छे ग्रन्थों का पठन-पाठन करते रहना चाहिए इससे आत्मिक और मानसिक विकास होता है। स्वामी जी ने कहा कि युवाओं को अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह इन पांच यमों को अपने जीवन में ढालना होगा। ये वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्व हैं जब हमारा युवा वर्ग इन गुणों से विभूषित होगा तभी पाश्चात्य संस्कृति से लोहा ले पायेगा। समारोह में अनेकों वक्ताओं नेअपने विचारों से शिविरार्थियों का मार्ग दर्शन किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. धर्मपाल आर्य ने किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

ग्राम चौरा माजरा तह.-घरौंडा करनाल में गौरक्षा एवं राष्ट्ररक्षा आर्य महासम्मेलन का हुआ भव्य आयोजन

आर्य समाज एवं श्री मद्दयानन्द वेद प्रचार मिशन के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 31 मई, 2015 को ग्राम-चौरा माजरा, तह. -घरौंडा, करनाल में गौरक्षा एवं राष्ट्ररक्षा महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रात: 10 बजे से आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में विश्व शांति महायज्ञ किया गया। इस भव्य समारोह में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, गौरक्षा सम्मेलन तथा युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया था। उनके अतिरिक्त मुख्य अतिथि के रूप में घरौंडा के विधायक श्री हरविन्द्र सिंह कल्याण, श्री प्रज्ञान मुनि वानप्रस्थी, स्वामी श्रद्धानन्द, प्रो. ओम प्रकाश आर्य, आचार्य सन्तराम, श्री धर्मदेव खुराना, श्री कुलदीप भास्कर, श्री सन्दीप आर्य, श्री सन्दीप कुमार वेदालंकार, श्री धर्मेन्द्र आर्य, श्री जसविन्द्र आर्य सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। श्री जसविन्द्र आर्य तथा श्री संदीप आर्य ने अपने मनोहारी भजनों से समां बांध दिया।

सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान युवा हृदय सम्राट स्वामी आर्यवेश जी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में देश के युवा वर्ग को संस्कारित करने के लिए शिक्षा प्रणाली, प्रचार माध्यम एवं समाज के दूषित वातावरण को बदलने में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आज सबसे बड़ी आवश्यकता युवा शक्ति को आर्य समाज से जोड़ने की है। जिस संस्था में युवा शक्ति जितनी अधिक होगी वह संस्था उतनी ही बलवती होगी। आज पाश्चात्य संस्कृति और भोगवाद के कारण हमारी युवा शक्ति पथ भ्रष्ट होती जा रही है। हम सबका यह कर्तव्य है कि उन्हें इस दलदल से निकालें। इसके लिए आर्य समाजों और विभिन्न संस्थाओं को चारित्रिक शिविरों का आयोजन करना चाहिए और वहां पर उन्हें संस्कारित और प्रशिक्षित करने का कार्य युद्ध स्तर पर किया जाना चाहिए। युवा वर्ग को संस्कारित करके आर्य समाज से जोड़ने का कार्य बड़े पैमाने पर किया जाना चाहिए।

इस अवसर पर विभिन्न वक्ताओं ने देश तथा समाज की बिगड़ती स्थिति पर चिन्ता प्रकट की तथा आर्य समाज तथा देश को उन्नत करने के कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

समाज को पंगु बनाने का औजार

– अशोक भारत

सरकारों का जोर मदिरा का उत्पादन एवं बिक्री से ज्यादा से ज्यादा आमदनी करना है। उत्तर प्रदेश सरकार के आबकारी विभाग के वर्ष 2012-13 के कार्यपूर्ति दिग्दर्शन में कहा गया है कि 'उपभोक्ताओं को मानक गुणवत्ता की मदिरा उचित दाम पर उपलब्ध कराने व प्रदेश के राजस्व में समुचित वृद्धि सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वर्तमान आबकारी नीति लागू की गई है। स्पष्ट है कि सरकार ज्यादा से ज्यादा मदिरा बेचकर अधिक से अधिक राजस्व की उगाही करना चाहती है। उपर्युक्त दस्तावेज में स्वीकार किया गया है कि वर्तमान आबकारी नीति के अन्तर्गत आबकारी राजस्व में लगातार वृद्धि हो रही है। विभाग ने न्यूनतम व्यय पर अधिकतम राजस्व अर्जित करके कार्यक्षमता और दक्षता के क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर दी है। विभाग ने वर्ष 2011-12 में राजस्व की प्राप्ति में 21.02 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज कर कुल 813.09 करोड़ रुपये तथा वर्ष 2013-14 में 11875 करोड़ रुपये अर्जित की है। सरकार का वर्ष 2014-15 में राजस्व प्राप्ति का घोषित लक्ष्य 14500 तथा वर्ष 2015-16 में 17500 करोड़ रुपये है।

सरकार की यह नीति भारतीय संविधान की धारा-47 के खिलाफ एवं समाज को पंगु बनाने वाली है। संविधान की धारा-47 में कहा गया है कि 'राज्य अपनी जनता के पोषक भोजन और जीवन निर्वाह के स्तर को ऊँचा करने और सार्वजनिक स्वास्थ्य के सुधार को अपने प्रारम्भिक कर्त्तव्यों में मुख्य समझेगा और विशेषतया राज्य यह प्रयत्न करेगा कि नशीले पेयों और नशीली दवाईयों के जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, प्रयोग का निषेध हो, सिवाय उनके जो चिकित्सा के काम की है।''

लेकिन आजादी के 67 वर्ष बाद भी सरकारें सबों की पोषक भोजन एवं जीवन-निर्वाह के स्तर को ऊँचा करने में विफल रही हैं। आज भी देश का हर चौथा आदमी भूखा है और हर दूसरा बच्चा कुपोषण का शिकार है। यह राष्ट्रीय शर्म की बात है। वह भी जब देश एक महाशक्ति बनने की होड़ में शामिल है। दूसरी तरफ सरकार शराब के उत्पादन एवं बिक्री को प्रोत्साहन देने में लगी है। सरकार की आबकारी नीति अंतर्विरोध से परिपूर्ण एवं गुमराह करने वाली है। एक तरफ सरकार मद्यनिषेध के लिए अभियान चलाती है और दूसरी तरफ मदिरा के उत्पादन एवं बिक्री से अधिकतम राजस्व की उगाही का लक्ष्य भी निर्धारित करती है, जिसके आर्थिक, सामाजिक प्रभाव अत्यन्त घातक है।

महात्मा गाँधी ने कहा था, ''जो राष्ट्र शराब की आदत का शिकार है, उसके सामने विनाश मुँह बाये खड़ा है। इतिहास में इसके कितने ही प्रमाण हैं कि इस बुराई के कारण कितने ही राष्ट्र मिट्टी में मिल गए।'' उन्होंने इसे शरीर व आत्मा के लिए हानिकारक व्याधि कहा था। उनका मानना था कि ''मद्यपान एवं अन्य नशीले पेयों का व्यसन अनेक दृष्टियों से मलेरिया एवं ऐसे ही अन्य रोगों से उत्पन्न व्याधि से भी बुरा है। क्योंकि जहाँ मलेरिया आदि से केवल शरीर को ही क्षति पहुंचती है वहाँ मद्यपान से शरीर एवं आत्मा दोनों ही क्षतिग्रस्त होते हैं।

मदिरापान किसी भी समस्या का समाधान नहीं अपितु समस्याओं की जड़ है। अत्यधिक शराब के सेवन से लीवर में सूजन, अल्सर, पीलिया, नपुंसकता, हृदय से सम्बन्धित बीमारियाँ, नाड़ी संस्थान के विभिन्न रोग, बेहोशी तथा अन्य प्रकार की व्याधियाँ जन्म लेती हैं। मदिरापान से पेट में गैस और दर्द तो होता ही है, कालान्तर में यह अल्सर का कारण बनता है। मदिरापान से आंतों को शोषित करने की क्षमता में कमी आ जाती है। 75 प्रतिशत लोग जिनके लीवर में सूजन पाई जाती है, उनके पीछे अल्कोहल जरूरी होती है। इसमें भूख का कम लगना, बेचैनी, उल्टी होना और पाचन सम्बन्धी विकार उत्पन्न होते हैं। यकृत की कोशिकाओं में सूजन से यकृत काम करना बन्द कर देती है। कभी-कभी अल्कोहल ज्यादा मात्रा में लेने से अवशोषित सोडियम और पानी का संचालन में कठिनाई होती है। फलस्वरूप शरीर की अन्य जैविक क्रियाएं धीमी पड़ जाती हैं।

शराब के सेवन से रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता क्षीण होती जाती है और व्यक्ति की जीवन प्रत्याशा कम होती जाती है। मानसिक दुर्बलता, क्रोध, उत्तेजना, संदेह, स्मृतिनाश व विभिन्न प्रकार की मनोविकृतियाँ मदिरापान की ही देन है। अपराधों एवं दुर्घटनाओं की जननी है शराब, क्योंकि कोई भी कुकृत्य होशपूर्ण अवस्था में करने का साहस न करने वाला व्यक्ति नशे के उन्माद में सहज ही ढेरों अपराध व दुर्घटनाओं का कारण बनता है। एक अध्ययन के अनुसार 37 प्रतिशत दुर्घटनाओं का कारण शराब है। 15-20 प्रतिशत सिर पर चोट लगने के घटना का (Brain Injury) कारण भी शराब है। आत्महत्या करने वालों में 34 प्रतिशत शराब का सेवन करने वाले होते हैं। कार्यस्थल पर होने वाली दुर्घटना में 40 प्रतिशत शराब के कारण होती हैं तथा कार्य स्थलों में 27 प्रतिशत गैरहाजिरी का कारण शराब है। पति द्वारा पत्नी पर की जाने वाली 85 प्रतिशत हिंसा का कारण शराब को पाया गया है।

वैयक्तिक, पारिवारिक एवं सामाजिक विघटन के लिए उत्तरदायी है शराब, क्योंकि मद्यपान के कारण व्यक्ति टूटता है, परिवार टूटता है, सुहाग उजड़ते हैं, स्त्री जाति अपमानित होती है, लोग दीवालिया बनते हैं, घर बिकते हैं, खून होते हैं और मानवता नष्ट होती है।

सरकार का तर्क है कि विकास योजनाओं को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने में आबकारी विभाग द्वारा उपलब्ध राजस्व का योगदान महत्त्वपूर्ण है। विभाग का दावा है कि उसके द्वारा अर्जित राजस्व का 99 प्रतिशत भाग विकास परियोजनाओं के लिए प्रयुक्त किया जाता है। ऊपरी तौर पर देखा जाए तो सरकार का दावा सही प्रतीत होता है, मगर गहराई से परीक्षण करने पर तस्वीर का दूसरा पहलू उभर कर सामने आता है। महात्मा गाँधी से मद्यपान और अन्य नशीले पेयों से होने वाली राज्य की आय को निकृष्टतम ढंग से कराधा[illegible] बाजारवादी अर्थव्यवस्था में हमारे सोचने-विचा[illegible] मान्यताओं में गुणात्मक परिवर्तन हो गया है। सा[illegible] पर है, चाहे वह जैसे भी अर्जित किया जाए। यह[illegible] एजेंडा हो गया है। जनस्वास्थ्य सामाजिक न्याय, लोककल[illegible] का विचार गौण हो गया है। महात्मा गाँधी ने कहा था ''मैं [illegible] को शराबी होने के स्थान पर भारत का कंगाल राज्य के रू[illegible] होना पसंद करूँगा। यदि भारत को सुरापान से सर्वथा मुक्त [illegible] मूल्य चुकाने के लिए भारत को शिक्षा से भी वंचित रहना पड़े तो मुझे यह स्थिति स्वीकार है।'' मगर आजकल यह विचार प्रचलन में नहीं है और हम राष्ट्रपिता के प्रेरणादायक उत्पादक विचार को भुलाने में लगे हैं।

सवाल यह उठता है कि अगर गुजरात राज्य पूर्ण मद्य निषेध के बावजूद देश के सर्वाधिक विकसित राज्यों में से एक है तो फिर अन्य राज्यों में ऐसा क्यों नहीं हो सकता। स्मरण रहे कि 16वीं लोकसभा चुनाव में गुजरात का विकास मॉडल बड़ा मुद्दा बना था [illegible]से जनता का पूरा समर्थन मिला। असल में राजस्व की हानि केवल कोरा भ्रम है। महात्मा गाँधी मानते थे कि ''राजस्व की हानि केवल ऊपरी तौर पर ही होती है। इस पतनोन्मुखी कर के हटा लिए जाने से मद्यपान से मुक्त करदाता अधिक कमाने में और अच्छी तरह से व्यय करने में समर्थ हो सकेगा। अत: ऐसा होने से केवल व्यक्ति को ही लाभ नहीं होगा, अपितु राष्ट्र को ठोस आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकेगा।''

वैसे देखा जाये तो शराब के कारण होने वाले राजस्व से लाभ की तुलना में हानि अधिक है। इसके (शराब) कारण किए जाने वाले आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय, स्वास्थ्य सेवा, पुलिस, प्रशासन, न्यायालय आदि के खर्चे का आंकलन किया जाए तो प्राप्त राजस्व की तुलना में व्यय ही ज्यादा होता है। एक अध्ययन में यह पाया गया है कि शराब से प्राप्त आय की तुलना में उसके कारण होने वाला कुल व्यय 60 प्रतिशत ज्यादा होता है। शराब एक ऐसी बुराई है, जिसे जड़मूल से समाप्त किये बिना स्वास्थ्य एवं समृद्ध राष्ट्र का सपना साकार नहीं हो सकता। अत: हम सबको पूर्ण नशामुक्त समाज की स्थापना हेतु अपनी-अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। हम सबका दायित्व है कि सम्पूर्ण मानवता को मद्य एवं मादक पदार्थों से बचाने हेतु अपनी-अपनी भूमिका को अंजाम दें। स्वयं नशीले पदार्थों का परित्याग करें। जन-जन तक इसके दुष्परिणामों और भ्रांतियों की जानकारी को पहुंचाएं। पूर्ण नशामुक्त समाज की स्थापना हेतु जन-जागृति फैलायें तथा लोकशक्ति का निर्माण करें।

– युवा संवाद से साभार